## विचार बिन्दु

**सबसे उत्तम विजय प्रेम की है। जो सदैव के लिए विजेताओं का हृदय बाँध लेती है। –सम्राट अशोक**

# सफलता का मूलमंत्र है युक्ति

युक्ति एक सार्वभौमिक सिद्धांत है। आचार्य चरक के अनुसार अनेक कारणों की समग्रता और एकीकरण से उत्पन्न भावों को जो बुद्धि देखती है, वह युक्ति है। युक्ति से वत्तर्मान, भूत और भविष्य, तीनों कालों का अनुमान होता है। युक्ति के द्वारा धन–संपत्ति, धर्म और कत्तर्व्यपालन और उपभोग और आनंद प्राप्त किया जाता है (च.सू.11.25): बुद्धिः पश्यति या भावान् बहुकारणयोगजान्। युक्तिस्त्रिकाला सा ज्ञेया त्रिवर्गः साध्यते यया।। ध्यान दीजिये, यहाँ आचार्य चरक ने युक्ति को परिभाषित तो किया ही है, साथ ही युक्ति की सार्वभौमिकता का दर्शन भी स्पष्ट किया है। युक्ति के द्वारा अर्थ, धर्म और काम की सिद्धि का सिद्धांत वस्तुतः जीवन में पुरुषार्थ साधने की रणनीति है। संक्षेप में कहें तो पूर्व में प्राप्त समग्र अनुभव और जानकारी के द्वारा अज्ञात को जान लेने वाली बुद्धि ही युक्ति है।

आचार्य चरक द्वारा युक्ति की परिभाषा को बहुत लोगों ने बहुत प्रकार से विश्लेषण किया है। अनेक प्रकार के संयोगों से उत्पन्न हुये अविज्ञात भावों या विषयों को, विज्ञात विषयों के कार्य व कारण भावों के प्रकाश में जो बुद्धि देखती है या ज्ञान कराती है, उसे युक्ति कहा जाता। इस युक्ति के द्वारा त्रिकाल (वर्तमान, भूत, भविष्य) का ज्ञान होता है तथा त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ और काम) की सिद्धि होती है। एक अन्य रूप में देखें तो जो बुद्धि अनेक कारणों के संयोग से उत्पन्न अथवा ज्ञात जिन भावों को देखती है उस त्रिकाल–ज्ञानकारक बुद्धि को युक्ति कहते हैं। इसी के द्वारा अर्थ, धर्म व काम की उपलब्धि की जाती है।

अगर युक्ति को प्रमाण के रूप में देखा जाये तो यह वस्तुतः अनुमान प्रमाण में समाहित और अनुमान की सहायक मानी जाती है। यही कारण है कि आचार्य चरक द्वारा सूत्र स्थान में आप्तोपदेश, प्रत्यक्ष, अनुमान और युक्ति को पृथक–पृथक प्रमाण मानने के बाद भी आगे विमान स्थान में अनुमान को परिभाषित करते समय स्पष्ट किया है कि अनुमान वह तर्क है जो युक्ति की अपेक्षा रखता है (च.वि.4.6): अनुमानं खलु तर्क युक्त्यपेक्षः।। यही कारण है कि विमान स्थान में मूलतः तीन ही प्रमाण–आप्तोपदेश, प्रत्यक्ष, अनुमान–वर्णित किये गये हैं। अनुमान में ही युक्ति का अर्न्तभाव मान लिया जाता है।

युक्ति केवल कोरा दर्शन नहीं बल्कि एक ठोस प्रायोगिक साधन है। बहुत से विज्ञात या जाने–पहचाने अर्थों में कारण और प्रभाव को देखकर अविज्ञात या अपरिचित या अज्ञात अर्थों में कारण और प्रभाव को ज्ञात करना, समझना या प्रयोग करना युक्ति है। उदाहरण के लिये यदि आप यह पहले से जानते हैं कि जोते हुये खेत में अनुकूल ऋतु में बीज बोने और समय–समय पर खाद–पानी देने से अनाज का अच्छा उत्पादन होता है, तो आपके लिये यह विज्ञात अर्थ है। इस विज्ञात अर्थ से यह भी समझा जा सकता है कि वन–भूमि में वर्षा–जल एवं मृदा संरक्षण कर बीजारोपण या पौधारोपण करने तथा पौधों की सिंचाई और देखभाल करने पर वृक्ष तैयार होंगे। ऐसा समझना युक्ति है।

एक अन्य उदाहरण से युक्ति का ठोस प्रायोगिक महत्त्व और भी स्पष्ट हो जायेगा। आयुर्वेद के सामान्य–विशेष सिद्धान्त के अनुसार यह माना जाता है कि एक जैसे भावों (द्रव्य, गुण और कर्म) को समान प्रकार के भावों से मिलाने पर बढ़त होती है और विशेष या असमान भावों को मिलाने पर ह्रास या घटत होती है। यह विज्ञात अर्थ है। इस सिद्धान्त (यहाँ पर विज्ञात अर्थ)के अनुसार यदि युक्ति लगाकर देखें तो एक बात स्पष्ट होती है कि घर में गुस्सैल किशोर या किशोरी के गुस्से को ठंडा करने के लिये यदि माता–पिता गुस्से और चिड़चिड़ाहट से पेश आते हैं तो किशोरों का गुस्सा और ज्यादा भड़केगा। इसके विपरीत यदि गुस्सैल किशोर या किशोरी से माता–पिता स्नेहपूर्वक व्यवहार करें उनका गुस्सा भी शांत हो जाता है। यह युक्ति है।

आयुर्वेद में युक्ति का प्रमाण–आधारित चिकित्सा में भारी महत्त्व है। चरकसंहिता में स्पष्ट किया गया है कि मृत्यु की तिथि तय नहीं है, अपितु प्राणियों की आयु युक्ति की अपेक्षा रखती है (च.वि. 3.29): भूतानामायुर्युक्तिमपेक्षते। युक्ति से उम्र बढ़ सकती है। असल में युक्ति–व्यपाश्रय या प्रमाण–आधारित चिकित्सा आचार्य चरक द्वारा आयुर्वेदाचार्यों पर किये गये विश्वास की पराकाष्ठा है। विस्तृत संहिताओं के बाद भी आयुर्वेदाचार्यों पर इतना बड़ा विश्वास करने का कारण सिर्फ यह है कि चिकित्सा में सफलता युक्ति पर निर्भर है (च.सू. 2.16): सिद्धिर्युक्तौ प्रतिष्ठिता। जब सफलता युक्ति पर आश्रित हो तो केवल शास्त्रों और संहिताओं के निर्देश मात्र नहीं बल्कि आयुर्वेदाचार्यों का अनुभवजन्य ज्ञान भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

**युक्ति कोरा दर्शन नहीं बल्कि एक ठोस प्रायोगिक साधन है जिसके माध्यम से आप स्वयं के लिये उन सात दीवारों-आहार, विहार, सद्वृत्त, स्वस्थवृत्त, पंचकर्म, रसायन, औषधि- को सम्हाल सकते हैं जो हमारे जीवन और मृत्यु के बीच या स्वास्थ्य और रुग्णता के बीच अस्तित्व में हैं। संक्षेप में कहें तो पूर्व में प्राप्त समग्र अनुभव और जानकारी के द्वारा अज्ञात को जान लेने वाली बुद्धि ही युक्ति है।**

युक्ति–व्यपाश्रय का आयुर्वेद में महर्षि चरक द्वारा किया गया उपयोग आयुर्वेद को पूर्णतः प्रमाण–आधारित चिकित्सा पद्धति बना देता है। उदाहरण के लिये (च.सू., 11.54): युक्तिव्यपाश्रयं–पुनराहारौषधद्रव्याणांयोजना, अर्थात आहार तथा औषधि द्रव्यों की योजना को युक्ति–व्यपाश्रय कहा जाता है। यह योजना उन्ही तर्कें और विधियों पर निर्भर होती है जिनकी चर्चा ऊपर की गयी है। यह पूर्ण रूप से कारण और प्रभाव (कॉज एंड इफ़ेक्ट) के अद्भुत सैद्धांतिक पृष्ठभूमि पर केन्द्रित है (च.सू.11.32): कर्तृकरणसंयोगात् क्रिया कृतस्य कर्मणः फलं नाकृतस्य नाङ्कुरोत्पत्तिरबीजात् कर्मसदृशं फलं नान्यस्माद्बीजादन्यस्योत्पत्तिः इति युक्तिः। तात्पर्य यह है कर्ता व साधन के जोड़ से क्रिया होती है, किये गये कार्य का फल मिलता है न कि नहीं किये गये कार्य का, बीज के बिना अंकुर नहीं उत्पन्न होता, जैसा काम वैसा फल, एक जाति के बीज से अन्य की उत्पत्ति नहीं होती, यही युक्ति है। आयुर्वेदिक औषधियों के संबंध में भी युक्ति की बड़ी भूमिका है (च.सू.2.16): मात्राकालाश्रया युक्तिः सिद्धिर्युक्तौ प्रतिष्ठिता।तिष्ठत्युपरि युक्तिज्ञो द्रव्यज्ञानवतां सदा।। औषधीय द्रव्यों की युक्ति (योजना, योग–निर्माण, योगीकरण या फार्म्युलेशन) मात्रा और काल पर निर्भर है, सफलता युक्ति पर निर्भर है, इसीलिये युक्तिज्ञ सदैव द्रव्य–ज्ञानियों से ऊपर है।

ध्यान से देखा जाये तो युक्ति एक सार्वभौमिक सिद्धान्त है, जिसमें यह संदेश निहित है कि युक्ति से धन, सम्पदा, धर्म तथा आनन्द सब प्राप्तकिया जा सकता है। आधुनिक प्रबन्ध–विज्ञान की दृष्टि से देखें तो किसी भी कार्य में सफलता युक्ति पर आश्रित है। युक्ति के बिना सामजिक, आर्थिक या पारस्थितिकीय तंत्रों को नहीं साधा जा सकता।

आधुनिक प्रबन्ध–विज्ञान में युक्ति उपलब्ध ज्ञान, शोध एवं अनुभवजन्य ज्ञान के प्रकाश में किसी नवीन कार्य के सम्पादन के लिये जो साधन या विधि प्रयोग में लायी जाती है, वह युक्ति है। प्रबंधकों के अपने पूर्व केअनुभवों की समग्रता के आधार पर जब उनकी बुद्धि वर्तमान परिस्थितियों और समस्याओं को समझती है या देखती है और उनका हल सुझाती है तो उसे युक्ति कहा जाता है। असल में प्राचीन काल से लेकर आज तक युक्ति के बिना मानव का काम नहीं चल सका। सफलता युक्ति पर आश्रित है(च.सू.2.16): सिद्धिर्युक्तौ प्रतिष्ठिता। यही कारण है कि आयुर्वेद के अलावा भी अनेक ग्रंथों में युक्ति के महत्वपूर्ण वर्णन उपलब्ध हैं। उदाहरण के लिये बुद्धचरित में अश्वघोष का कथन है कि समुचित युक्ति से करने पर सब कुछ किया जा सकता है (बुद्धचरित, 13.60): न्यायेन युक्तं च कृतं च सर्वम्। दरअसल युक्ति पर पूरा युक्तिशास्त्र है जिसे उपयुक्तता और औचित्य का विज्ञान भी कहा जाता है।

युक्ति को जुगाड़ समझाने की भूल नहीं करना चाहिये। युक्ति और जुगाड़ में कई अंतर हैं, पर मुख्य फ़र्क तर्क और तुक्का का है। युक्ति स्वयं प्रमाण होते हुये प्रमाण–आधारित चिकित्सा का मूल आधार है। जुगाड़ ट्रायल–एंड–एरर है: काम कर भी जाये तो भी घुणाक्षर न्याय ही कहलायेगा। घुनों के चलने से लकड़ी में अक्षरों जैसे आकार बन जाते हैं, हालाँकि घुन लिखने के उद्देश्य से नहीं काटते कि अक्षर बनें। इसी प्रकार जहाँ एक काम करने में कोई दूसरी बात अनायस हो जाय वहाँ घुणाक्षर न्याय हो जाता है। इस न्याय या उक्ति का प्रयोग ऐसे स्थलों पर करते हैं जहाँ किसी के द्वारा ऐसा आकास्मिक कार्य हो जाता है जो स्पष्ट, उद्देश्य, ज्ञान, तर्क, या युक्ति का प्रयोग किये बिना ही अनायास हो गया हो। कहने का तात्पर्य यह है कि जब तक विधि दोषपूर्ण या तर्कविहीन होती है, तब तक परिणाम केवल संयोग ही कहलाता है।

आधुनिक वैज्ञानिक सन्दर्भ में ज्ञान के उत्पादन के चार तरीके हैं: थ्योरी, ऑब्जरवेशन, एक्सपेरिमेंट औरमॉडलिंग। यहाँ युक्ति को मॉडलिंग के समकक्ष मन जाता है क्योंकि पूर्व में उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर मैथमेटिकल–मॉडलिंग के द्वारा भविष्य की स्थिति का ज्ञान किया जाता है। आयुर्वेद के प्रमुख ठांथों और संहिताओं का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि औषधियों व चिकित्सा को प्रमाण–आधारित बनाने के लिये चार प्रमुख विधियाँ प्रयुक्त होती रही हैं। इनमें प्रत्यक्ष प्रमाण या डायरेक्ट ऑब्जर्वेशन, अनुमान या इनफरेंशियल एवीडेन्स, आप्तोपदेश या विद्वानों द्वारा पूर्व में दी गयी जानकारी, और अंततः युक्ति प्रमाण या रेशनल एक्सपेरिमेंटल एवीडेन्स हैं। प्रमाण–आधारित आयुर्वेद न केवल इन चार महत्वपूर्ण अवधारणाओं पर टिका है, बल्कि उक्त चारों विधियाँ शोध–आधारित प्रमाण, स्थानीय–ज्ञान पर आधारित प्रमाण, अनुभवजन्य–ज्ञान पर आधारित प्रमाण, आयुर्वेद की संहिताओं पर आधारित प्रमाण, सामाजिक स्वीकार्यता पर आधारित प्रमाण तथा आधुनिक शोध में प्रचलित थ्योरी, ऑब्जर्वेशन, एक्सपेरिमेंट एवं मॉडलिंग से बहुत भिन्न नहीं हैं।

इस चर्चा का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है? सबसे पहली बात तो यह है कि युक्ति वस्तुतः ज्ञात यथार्थ के माध्यम से अज्ञात यथार्थ को जानने का विज्ञान है। इसलिये युक्तिपूर्वक कार्य करने से जीवन में कुछ प्राप्त करने के लिये युक्ति का प्रयोग ही श्रेयस्कर है। दूसरी बात यह है कि आप उन आयुर्वेदाचार्यों को उत्तम मानकर उनसे चिकित्सा ले सकते हैं जो पूर्णतः युक्ति–व्यपाश्रयी या प्रमाण–आधारित चिकित्सा करते हैं। और तीसरी बात यह है कि युक्ति कोरा दर्शन नहीं बल्कि एक ठोस प्रायोगिक साधन है जिसके माध्यम से आप स्वयं के लिये उन सात दीवारों–आहार, विहार, सद्वृत्त, स्वस्थवृत्त, पंचकर्म, रसायन, औषधि–को सम्हाल सकते हैं जो हमारे जीवन और मृत्यु के बीच या स्वास्थ्य और रुग्णता के बीच अस्तित्व में हैं। जहाँ तक प्रतिदिन के जीवन का प्रश्न है उसमें सभी प्रकार के कार्यों के संपादन में सफलता प्राप्त करने का मूलमंत्र युक्तिपूर्वक लगे रहना है।

**–अतिथि सम्पादक,**
**डॉ. दीप नारायण पाण्डेय**
**( भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर )**
**( यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं )**

# फादर्स डे ( पितृ सम्मान दिवस )



डॉ. जे.के. गर्ग

सच्चाई तो यही है कि हम अपने पापा की छत्र छाया में रह कर कब बडे और युवा हो जाते हें यह हमको मालूम ही नही हो पाता है। निःसंदेह पापा पिता अब्बू डेडी ही दिन–रात अपने बच्चे के लिए जीते–मरते रहते हैं, उनकी हर इच्छा को पूरा करने वाले के लिये हर सम्भव कोशिश भी करते हैं। पिता के जीवन का एक मात्र काम होता है अपने बेटी–बेटों को जीवन की सारी खुशियाँ देना और उन्हें एक कामयाब एवं योग्य मनुष्य बनाना, वें अपने बच्चों की ख़ुशियों के खातिर खुद की सारी खुशियों को छोड़ देते हें, खुद अभाव और तकलीफ में रह कर अपने बच्चों को सुख–सुविधाओं के समस्त साधन उपलब्ध करवातें हैं। बच्चों के लालन–पालन, परवरिश, शिक्षा आदि में मां के योगदान के साथ–साथ पिता का योगदान को भी भुलाया नहीं जा सकता है। वास्तिवकता तो यही है कि पिता ही बालक के लिये एक सच्चा दोस्त, पथ प्रदर्शक, गाइड, रोलमोडल एवं गुरु भी होता है। हर पिता अपने बेटे–बेटियों को जीवन में आने वाली बाधाओं का सामना करने के काबिल बनाता है और उनकी शिक्षा के लिये भरपूर प्रयास करता है। पिता ही अपने बच्चों को अच्छे–बुरे का भेद समझाता है। किसी ने सही ही कहा है कि 'पिता भगवान् के दुवारा भेजे गये धरती पर देव दूत ही होते हैं'। हमारे वेद, पुराण, दर्शनशास्त्र, स्मृतियां, महाकाव्य, उपनिषद आदि सब माता–पिता की अपार महिमा के गुणगान से भरे पड़े हैं।

असंख्य ऋषियों, मुनियों, तपस्वियों, पंडितों, महात्माओं, विद्वानों, दर्शन शास्त्रियों, साहित्यकारों और कलाकारों ने भी माता–पिता के प्रति पैदा होने वाली अनुभूतियों को कलमबद्ध करने का भरसक प्रयास किया है। सच्चाई तो यही है कि 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव। त्वमेव विद्या च द्रविणम त्वमेव, त्वमेव सर्वमम देव देवः।'

हमारी संस्क्रति में तीन प्रकार के ऋण यानि–राष्ट्रऋण, पित्रऋण और गुरु ऋण का उल्लेख किया जाता है एवं हर इन्सान से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपने सुकृत्यों से इन तीनों ऋण से ऊऋण होने का भरपूर प्रयास करें। सच्चाई तो यही है कि बच्चें अपने पिताजी के कर्ज से अपने आपको कभी भी मुक्त नहीं कर सकते हैं। हम सभी को पित्रऋण को चुकाने के लिये हर मुमकिन कोशिश करनी चाहिए तथा अपने पिताजी की सुख–सुविधाओं का ध्यान रख उनकी देख भाल करनी चाहिए।

फादर्स डे या पितृ सम्मान दिवस मात्र पिताजी का ही नहीं वरन दादाजी, नानाजी पड दादी–दादाजी, पड नानी–नाजी एवं समस्त पितृ तुल्य स्वजनों, मित्रों एवम् समस्त परिचितों के प्रति सम्मान–आदर व्यक्त करने का दिवस है। दुनियांभर में फादर्स डे पर सभी वर्गों के स्त्री–पुरुषयानि युवक–युवतियां, बेटे–बेटियां, प्रोढ़ स्त्री–पुरुष अपने बुजुर्ग पिता और समस्त पितृ तुल्यों के प्रति उनकी सेवाओं, योगदान, मार्गदर्शन को याद कर अपना आभार और क्रतज्ञता व्यक्त करते हैं।

फादर्स डे पर स्वजन अपने पिताजी एवम् पितृ तुल्य व्यक्तियों को बाहर सैर सपाटे के लिये ले जाते हैं तथा उनके साथ समय बिता कर उन्हें विश्वास दिलाते हैं कि आप अकेले नहीं हैं हम सभी बच्चें आपके साथ है तथा आपकी सेवा सुरक्षा की जिम्मेदारी हमारी है। फादर्स डे पर बच्चें, चाहे वे कहीं भी हो उन्हें उपहार भेज कर इस बात की शपथ लेते हैं कि वे सभी उनके प्रति अपने सभी कर्तव्यों को जीवन पर्यन्त पुरी निष्ठा के साथ पूरा करेगें। मुझे कई बार अमेरिका जाने का अवसर मिला है वहां पर भारतीय समुदाय फादर्स डे पर विशाल स्तर पर पिकनिक का आयोजन करता हैं एवं इस पिकनिक में सभी पुरुष वर्ग के बुजुर्गों को सम्मानित कर उनके योगदान को याद कर उनके प्रति अपना आभार प्रकट करते हें, इस अवसर पिता एवम् पितृतुल्य व्यक्तियों के चेहरों पर आई मुस्कान जहाँ उन्हें आत्मसंतोष तो देती है वहीं उनको युवाओं के समान स्फूर्ति भी प्रदान करती हैं। मुझे कई बार अमेरिका जाने का अवसर मिला है वहां पर भारतीय समुदाय फादर्स डे पर विशाल स्तर पर पिकनिक का आयोजन करता हैं एवं इस पिकनिक में सभी पुरुष वर्ग के बुजुर्गों को सम्मानित कर उनके योगदान को याद कर उनके प्रति अपना आभार प्रकट करते हें, इस अवसर पिता एवम् पितृतुल्य व्यक्तियों के चेहरों पर आई मुस्कान जहाँ उन्हें आत्मसंतोष तो देती है वहीं उनको युवाओं के समान स्फूर्ति भी प्रदान करती हैं।

फादर्स डे मनाने के बारे में मार्मिक कहानी है। 1909 में व्याय.एम.सी.ए स्पोकेन– वाशिंगटन की निवासी सोनोरा स्मार्ट दोद्द ने मदर्स डे के बारे में सुना था। सोनोरा स्मार्ट दोद्द अपने पिताजी का हृदय से सम्मान करती थी, क्योंकि उसके पिताजी ने अकेले ही उसके 6 भाई बहिनों का लालन पालन किया था। अपने पिताजी के प्रति आदर सम्मान को व्यक्त करने हेतु सोनोरा स्मार्ट दोद्द भी मदर्स डे के समान फादर्स डे मनाना चाहती थी इसीलिये उसने अपने मन की बात अपने मित्रों एवं स्वजनों के सामने प्रकट करते हुए मदर्स डे के समान ही फादर्स डे को मनाने का विचार प्रस्तुत किया। इस सम्बंध में सोनोरा स्मार्ट दोद्द ने अपने शहर के स्थानीय पादरी से मदर्स डे के समान फादर्स डे को आयोजित करवाने की प्राथना की जिसे कुछ समय बाद पादरी महोदय ने स्वीकार कर लिया। पादरी महोदय के सरमन की अनुपालना में 19 जून 1910 को पहली बार फादर्स डे बनाया गया। इसी परम्परा के अनुसार प्रति वर्ष जून महिने के तीसरे रविवार को अमेरिका एवम् कई अन्य देशों में फादर्स डे बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। पिछले कई सालों से विदेशो के साथ–साथ भारत में भी खासकर युवा वर्ग फादर्स डे को धूमधाम से मनाने लगा है। किसी ने सही कहा है पापा सबसे स्पेशल हैं क्यों कि जब कभी हमें तकलीफ होती है तो वो हमारा हाथ पकड़ कर हमें सहारा देते हैं एवं हिम्मत देते हैं,जब कभी हम जानें–अनजाने में नियमों का उल्ल्घन करते हैं तो वे हमें ड़ाटते–फटकारते हैं,जब कभी हमें सफलता मिलती है उस क्षण गर्व से उनका सीना 56 इंच चोडा हो जाता है एवं उनका चेहरा चमक उठता है। किसी ने पूछा वो कोन सी जगह है जहाँ हर गलती, हर जुर्म और हर गुनाह माफ़ हो जाता है? नन्हा बच्चा मुस्कुराया और बोला मेरे पापा का दिल।

हमारी भारतीय संस्कृति के अंदर हम को प्रत्येक अच्छी चीज या आदत अथवा गुण को स्वीकार करने को कहा गया जो समय कुल हो और उन पुरानी प्रथाओं को त्यागने की सलाह दी जाती जो सर्व हित में नहीं हो। अतः फादर्स डे या पितृ सम्मान दिवस को जो चाहे पश्चिमी देशों से आया हो को अपनाने और समस्त वर्द्ध अशक्त पिता, दादा, नाना–नानी और आसपास के वृद्धजनों का सम्मान करने एवं उनकी देखभाल करने और उनकी जिंदगी को खुशहाल बनाने की परम्परा को अपनाना ही चाहिये।

आईये आज फादर्स डे पर हम सभी संकल्प लें कि "हम अपने आप को पिता के प्रेम के योग्य बनायगें समस्त पिताओं, आत्मीय स्वजनों के चरणों में शत शत प्रणाम और नमन।"

**–डॉ. जे.के. गर्ग,**
**पूर्व संयुक्त निदेशक कालेज शिक्षा जयपुर**

# पानी की मांग को लेकर किसानों का धरना 16वें दिन भी जारी

**नगर, (निसं)।** रुपारेल नदी के सम्पूर्ण क्षेत्र को ईस्टर्न राजस्थान कैनाल प्रोजेक्ट में शामिल करने की मांग को लेकर बुर्जा मन्दिर सुन्दरावली पर चल रहा किसानों का धरना 16वें दिन भी जारी रहा।

धरने की अध्यक्षता परशुराम गुर्जर सरपंच चिरावल माली ने की। नेतृत्वकर्ता जिला पार्षद मोहना गुर्जर ने कहा कि पानी की मांग को लेकर आन्दोलन को और तेज किया जायेगा। उन्होंने कहा कि जब तक किसानों की मांगें नहीं मानी जाती तब तक संघर्ष जारी रहेगा। किसान नेता इन्दल सिंह जाट ने कहा कि दोनों सरकारों को किसानों की मांगों का समाधान करना चाहिये। किसान नेता इन्दल सिंह जाट

**■ 'जब तक किसानों की मांगें नहीं मानी जाती तब तक संघर्ष जारी रहेगा'**

ने कहा कि बगैर पानी के जीवन नहीं हैं खेती भी बर्बाद हो रही हैं। सरकार को समुद्र में बेकार बहकर जाने बाले पानी को ईआरसीपी के माध्यम सूखी पडी बाणगंगा नदी और गम्भीर तथा रुपारेल में लाना चाहिये। धरने में रुप सिंह नेताजी, हन्डू पटेल, मोरध्वज नम्बरदार, मान सिंह गुर्जर, बाबूलाल शर्मा रसिया, जीतू सरपंच, महाराज सिंह गुर्जर सहित बडी संख्या में किसानों ने हिस्सा लिया।



पानी की मांग को लेकर दिये जा रहे धरने में कई किसान शामिल हुये।

## बिजली के बिलों में विभिन्न शुल्कों से लोग परेशान

**चाकसू, (निसं)।** चुनाव से पूर्व सरकार को रिपीट करने के उद्देश्य से विभिन्न प्रकार की रियायत, छूट के नाम पर आए दिन घोषणाओं का दौर चल रहा है। आमजन अपने को ठगा सा महसूस करते हैं जब उनका सामना सरकारी विभागों एवं कर्मचारियों से होता है।

राज्य सरकार ने बिजली के बिलों में 100 से 200 यूनिट तक बिजली की छूट दिए जाने की घोषणा की है। लेकिन उपभोक्ताओं को जो बिल मिल रहे हैं उनमें उपभोग की गई बिजली की कीमत के अतिरिक्त स्थाई शुल्क, विद्युत शुल्क, फ्यूल सरचार्ज, नगरीय उपकर के नाम से मनमानी रकम वसूली की जा रही है जो उपभोक्ताओं के साथ सरासर अन्याय एवं धोखाधड़ी प्रतीत हो रही है।

उपभोक्ता को प्राप्त एक बिल में 440 यूनिट उपभोग करने पर स्थाई शुल्क 460 रुपए, फ्यूल सरचार्ज 448 रुपए, विद्युत कर 176 रुपए,

**■ बिजली के बिल उपभोक्ताओं को राहत के नाम पर कर रहे आहत**

नगरीय उपकर 66 रुपए आदि वसूल किए जा रहे हैं। इसी प्रकार एक अन्य बिजली के बिल में कुल उपभोग युनिट 36 ही है लेकिन विद्युत शुल्क 14.40 रुपए, स्थाई शुल्क 345 रुपए एवं फ्यूल सरचार्ज के नाम पर 740.66 रुपए वसूले जा रहे हैं।

समाजसेवी ठेकेदार राधेश्याम शर्मा, सुरज्ञान सिंह बड़ोदिया, रामजीलाल शर्मा, पार्षद दिनेश शर्मा आदि उपभोक्ताओं का कहना कि सरकार उपभोग की जा रही यूनिट का ही पैसा वसूल कर आम जनता को राहत क्यों नहीं दे रही। एक तरफ छूट की घोषणा तो दूसरी और विभिन्न शुल्क के नाम पर लूट की जा रही है। सरकार को गंभीरता से विचार करना चाहिए।

## कैलामाता के श्रद्धालुओं से यातायात पुलिस ने मारपीट की

**करौली, (निसं.)।** करौली कैलादेवी सड़क मार्ग पर स्थित नदी बरखेड़ा पुल सिद्धार्थ सिटी के पास यातायात पुलिस के द्वारा कैलादेवी के श्रद्धालुओं के साथ की गई मारपीट के मामले का श्रद्धालुओं ने कोतवाली थाने पर मामला दर्ज कराया है। यातायात पुलिस बरखेड़ा सिद्धार्थ सिटी के पास वाहन चेकिंग मे लगी थी जहां कैलादेवी आने जाने वाले श्रद्धालुओं के वाहनों की चेकिंग की जा रही थी। इधर मध्य प्रदेश के ग्वालियर के श्रद्धालु मां कैलादेवी के दर्शनों को जा रहे थे जिनके वाहन के कागजातों की चेकिंग करते समय यात्री और पुलिस के बीच मारपीट का मामला प्रकाश मे आया। मध्य प्रदेश के यात्रियों ने यातायात पुलिस पर चौथवसूली के लिए वाहन चेकिंग के दौरान मारपीट करने का आरोप लगाया। मारपीट के बाद आक्रोशित श्रद्धालुओं ने करौली

**■ श्रद्धालुओं ने कोतवाली थाने पर मामला दर्ज कराया**

**■ आक्रोशित श्रद्धालुओं ने करौली कैलादेवी-गंगापुर सड़क मार्ग पर ही जाम लगा दिया**

कैलादेवी–गंगापुर सड़क मार्ग पर ही जाम लगा दिया जिससे वाहनों की दोनों और लंबी कतार लग गई। जिससे यात्रियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। वहीं अन्य वाहन चालकों ने भी यातायात पुलिस पर चौथ वसूली के लिए परेशान करने का आरोप लगाए। घटना की सूचना मिलते ही कोतवाली प्रभारी डॉ. उदयभान, मामचारी थाना प्रभारी ओमेंद्र सिंह मय पुलिस जाब्ता के मौके पर पहुंच गए जिन्होंने समझाईश कर रास्ता खुलवाया और वाहनो का आवागमन शुरू किया। उसके बाद मध्य प्रदेश ग्वालियर निवासी नीरज पाराशर ने कोतवाली पर यातायात पुलिस के खिलाफ मारपीट करने का आरोप लगाते हुए मुकदमा दर्ज कराया।

इस मामले में पुलिस उपाधीक्षक अनुज शुभम ने कहा कि वाहन चेकिंग के दौरान मारपीट का मामला सामने आया है और यात्री ने रिपोर्ट भी दर्ज कराई है। इस सब मामले की जांच कर आवश्यक कार्यवाही करेंगे।

इसके अलावा उन्होंने यातायात पुलिस प्रभारी को निर्देश भी दिए हैं की हाईवे पर वाहन चेकिंग का फिक्स फोंट नहीं बनाएं और शहर के जो पॉइंट है उन पर यातायात पुलिसकर्मी तैनात रहे जिससे शहर की यातायात व्यवस्था गड़बड़ाए नहीं।

## राशिफल रविवार 18 जून, 2023



पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, अमावस्या, रविवार, विक्रम संवत 2080, मृगशिरा नक्षत्र सांय 6:06 तक, गंड योग रात्रि 12:59 तक, नाग करण प्रातः 10:07 तक, चन्द्रमा आज मिथुन राशि में संचार करेगा।

**ग्रह स्थितिः** सूर्य–मिथुन, चन्द्रमा–मिथुन, मंगल–कर्क, बुध–वृष, गुरू–मेष, शुक्र–कर्क, शनि–कुम्भ, राहु–मेष, केतु–तुला राशि में।

आज देवकार्या अमावस्या, आषाढ़ी अमावस्या है और फादर्स डे है।

**सर्वश्रेष्ठ चौघड़ियाः** चर 7:10 से 9:02 तक, लाभ–अमृत 9:02 से 12:23 तक, शुभ 2:00 से 3:53 तक।

**राहूकालः** 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:37, सूर्यास्त 7:18



**मेष**
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। नये–पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।



**वृष**
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।



**मिथुन**
घर–परिवार के कार्यों के कारण बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। परिवार में सुख–सुविधाओं पर धन खर्च हो सकता है। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।



**कर्क**
व्यक्तिगत कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है।



**सिंह**
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आवश्यक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है।



**कन्या**
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। आवश्यक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा।



**तुला**
परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी।



**वृश्चिक**
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।



**धनु**
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।



**मकर**
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।



**कुंभ**
अपने आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज प्रयासों में उचित सफलता मिल सकती है। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।



**मीन**
घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।